नेपोलियन युग एवं नेपोलियन का प्रारंभिक जीवन

नेपोलियन का प्रारंभिक जीवन (The Early Life of Napoleon)

नेपोलियन बोनापार्ट का जीवन इतिहास में अत्यंत प्रेरणादायक और प्रभावशाली रहा है। उनके प्रारंभिक जीवन, संघर्ष और उत्थान से जुड़ी मुख्य बातें निम्नलिखित हैं:

- **जन्म और परिवार:** नेपोलियन का जन्म 1769 ई. में कार्सिका टापू के 'अजसियो' नामक स्थान पर हुआ था। फ्रांस ने यह टापू 1768 ई. में जेनेवा से खरीदा था। उनके पूर्वज मूल रूप से इटली के थे और ढाई सौ वर्ष पहले कार्सिका में आकर बस गए थे।
- **माता-पिता और स्थिति:** उनके पिता 'कार्लो बोनापार्ट' एक साधारण वकील थे जो स्वभाव से विलासी और लापरवाह थे, जबकि उनकी माता 'लेटीसिया' बहुत ही दृढ़ निश्चय और समझदार महिला थीं। वे कुल आठ भाई-बहन थे जिनमें नेपोलियन दूसरे नंबर पर थे।
- **शिक्षा और कठिनाइयां:** सामंती परिवार से होने के कारण नेपोलियन को फ्रांस की सेना में कमीशन मिल गया। उसने पेरिस और ब्रौन के सैनिक विद्यालयों में निःशुल्क शिक्षा प्राप्त की। अमीर घरों के छात्र उसकी गरीबी का मज़ाक उड़ाते थे, जिससे नेपोलियन में हीन भावना जरूर आई, लेकिन साथ ही उसमें गम्भीरता और कठोर कर्तव्यपरायणता का गुण भी विकसित हुआ। गणित, इतिहास और भूगोल में उसकी विशेष रुचि थी। मात्र 16 वर्ष की आयु में उसने सैनिक स्कूल छोड़कर तोपखाने में द्वितीय लेफ्टिनेंट का पद संभाल लिया।

क्रांति और कार्सिका से निष्कासन

- **मातृभूमि की आज़ादी की इच्छा:** जवानी के दिनों में नेपोलियन की प्रबल इच्छा अपनी मातृभूमि कार्सिका को फ्रांस के नियंत्रण से मुक्त कराने की थी। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति से वह बहुत प्रभावित हुआ क्योंकि उसे लगा कि इससे कार्सिका को आज़ाद कराने का अच्छा मौका मिल गया है।
- **विचारों का प्रभाव:** उस पर रूसो, वाल्टेयर और तुर्गों जैसे विचारकों की रचनाओं का गहरा प्रभाव था। वह कार्सिका की किलेबंदी की योजनाएं बनाता रहता था।
- **संघर्ष और निष्कासन:** जब फ्रांस ने कार्सिका को पूर्ण राजनीतिक अधिकार दे दिए, तब कार्सिका के राष्ट्रीय नेता 'पावली' (जो इंग्लैंड में थे) वापस लौट आए। पावली इंग्लैंड की मदद चाहता था जबकि नेपोलियन इसके खिलाफ था। इस मतभेद के कारण नेपोलियन की स्थिति बहुत असुरक्षित हो गई और अंततः उसे कार्सिका से निकाल दिया गया। इसके बाद वह अपने परिवार के साथ फ्रांस आ गया।

क्रांति का दर्शक और तूलों की विजय

- **सेना से निष्कासन और गरीबी:** 1791 ई. में सेना से अनुपस्थित रहने के कारण नेपोलियन को सेना से निकाल दिया गया था। 1792 में वह पुनः फ्रांस लौटा, लेकिन उसे अत्यधिक गरीबी और बेकारी का सामना करना पड़ा। इस दौरान उसने पेरिस में क्रांति की कई हिंसक घटनाएं अपनी आँखों से देखीं।
- **जेकोबिन दल से जुड़ना:** इस मुश्किल समय में वह 'जेकोबिन दल' का सदस्य बन गया। 1792 में ही उसे पुनः सेना में पद मिल गया और उसे नाइस के तोपखाने में तैनात किया गया।
- **तूलों बंदरगाह की सफलता:** दक्षिणी फ्रांस के तूलों बंदरगाह पर विद्रोहियों ने अंग्रेज़ी बेड़े को बुला लिया था। नेपोलियन ने अपनी बेहतरीन तोपखाना रणनीति का इस्तेमाल कर अंग्रेजों को वहाँ से भगा दिया और विद्रोहियों को आत्मसमर्पण करने पर मजबूर कर दिया। यह नेपोलियन की पहली बड़ी सफलता थी, जिससे उसकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई और उसे 'ब्रिगेडियर जनरल' बना दिया गया।

वेन्डीमेयर की घटना और उत्थान

- **जेल से मुक्ति और पेरिस वापसी:** राब्सपियर के पतन के बाद नेपोलियन को कुछ समय के लिए जेल भी रहना पड़ा, लेकिन उस पर लगे आरोप निराधार साबित हुए और वह रिहा होकर पेरिस आ गया।
- **कन्वेंशन की रक्षा:** 5 अक्टूबर 1795 (वेन्डीमेयर) को जब उग्र भीड़ ने कन्वेंशन भवन पर हमला किया, तब रक्षा का जिम्मा संभाल रहे नेता 'बिलास' ने नेपोलियन को बुलाया। नेपोलियन ने अपनी तोपों से इस विद्रोह को पूरी तरह कुचल दिया और कन्वेंशन की रक्षा की। इस निर्णायक सफलता से वह पेरिस का एक जाना-माना और ताकतवर सेनापति बन गया।

विवाह और इटली का प्रथम अभियान

- **जोसेफिन से विवाह:** पेरिस में रहते हुए नेपोलियन की मुलाकात 'जोसेफिन ब्यूहरनायस' नामक महिला से हुई। नेपोलियन उससे अत्यधिक प्रेम करने लगा और अंततः उसने उससे विवाह कर लिया।
- **सेनापति की नियुक्ति:** अपने विवाह के ठीक दो दिन पहले उसे इटली की सेना का सेनापति नियुक्त किया गया, जहाँ से उसके महान सैनिक अभियानों और विजयों का नया दौर शुरू हुआ।